

॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ उपयोगोऽव्ययः वीरुधः प्रतानवत्यः औषध्यः फलपाकांताः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ अनुज्ञायपृष्ठा ॥ ३९ ॥ ब्रह्ममंत्रं ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ इत्यारण्यकेऽपर्वणि
नैलकंठीयेभारतभावेदीपेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

अस्त्राणीन्द्राचरुद्राच्चलोकपालेभ्यएवच ॥ समादायमहाबाहुर्महल्कर्मकरिष्यति ॥ ३४ ॥ वनादस्माच्चकौतियवनमन्यद्विचिंत्यतां ॥ निवासाथाययद्युक्तंभवेद्वः
पृथिवीपते ॥ ३५ ॥ एकत्रचिरवासोहिनप्रीतिजननोभवेत् ॥ तापसानांचसर्वेषांभवेदुद्वेगकारकः ॥ ३६ ॥ ऋगाणामुपयोगश्चवीरुदौषधिसंक्षयः ॥ विभर्षि
चबहून्विप्रान्वेदवेदांगपारगान् ॥ ३७ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ एवमुक्त्वाप्रपन्नायशुचयेभगवान्प्रभुः ॥ प्रोवाचलोकतत्त्वज्ञयोगीविद्यामनुत्तमां ॥ ३८ ॥
धर्मराजायधीमान्सव्यासः सत्यवतीसुतः ॥ अनुज्ञायचकौतियत्रैवांतरधीयत ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिरस्तुधर्मात्मातद्ब्रह्ममनसायतः ॥ धारयामासमेधावीकालेका
लेसदाऽभ्यसन् ॥ ४० ॥ सव्यासवाक्यमुदितोवनोद्वैतवनात्ततः ॥ ययौसरस्वतीकूलेकाम्यकंनमकाननं ॥ ४१ ॥ तमन्वयुर्महाराजशिक्षाक्षरविशारदाः ॥ ब्रा
ह्मणास्तपसायुक्तादेवैद्रष्टृष्योयथा ॥ ४२ ॥ ततःकाम्यकमासाद्यपुनस्तेभरतर्षभ ॥ न्यविशंतमहात्मानःसामात्याःसपरिच्छदाः ॥ ४३ ॥ तत्रतेन्यवसन्नाजन्
किंचिकलालंमनस्विनः ॥ धनुर्वेदपरावीराःशृण्वंतोवेदमुत्तमं ॥ ४४ ॥ चरंतोऽऽमृगयानित्यंशुर्द्वैर्बाणैर्ऋगार्थिनः ॥ पितृदेवतविप्रेभ्योनिर्वपंतोयथाविधि ॥ ४५ ॥
इतिश्रीमहाभारतेआरण्यकेऽपर्वणिअर्जुना०काम्यकवनगमनेषट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

जोयुधिष्ठिरः ॥ संरुह्यमुनिसंदेशमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ३ ॥ विविके विदितप्रज्ञमर्जुनं पुरुषर्षभ ॥ सांत्वपूर्वस्मितं कृत्वा पाणिनापरि संस्पृशन् ॥ २ ॥ समुहूर्त
मिव ध्यात्वा वनवासमरिंदमः ॥ धनं जयं धर्मराजो रहसीदमुवाच ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ भीष्मेद्रोणेकपेकर्णेद्रोणे पुत्रे च भारत ॥ धनुर्वेदश्च तुष्पाद एते
ष्वथ प्रतिष्ठितः ॥ ४ ॥ देवं ब्राह्मं मानुषं च स यत्नं स चिकित्सितं ॥ सर्वास्त्राणां प्रयोगं च अभिजानंति कृत्स्नशः ॥ ५ ॥ ते सर्वे धृतराष्ट्रस्य पुत्रेण परि संस्रिताः ॥ संवि
भक्ताश्च तुष्ठाश्च गुरुवत्तेषु वर्तते ॥ ६ ॥ सर्वयोधेषु चैवास्वसदा प्रीतिरनुत्तमा ॥ आचार्यामानितास्तु शः शांतिव्यवहरंत्युत ॥ ७ ॥

प्यादः आदानसंधानविसर्गसंहाराश्चत्वारः पादायस्य ॥ ४ ॥ देवं इंद्रवरुणाद्यत्वं ब्राह्मं ब्रह्मात्वं मानुषं धनुर्बाणादि यत्नः प्रहणधारणप्रयोगरूपः चिकित्सापरश्रयुक्ताकाशेषां प्रतीकारः एवैते सर्वास्त्राणां प्रयोगां अ
भिज्ञैः साकश्येन जानन्ति ॥ ५ ॥ गुरुवत् गुरुत्विब ॥ ६ ॥ शांतिदोषपरिहारं कर्तुं व्यवहरंतियन्ते ॥ ७ ॥